ओ३म्

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

आर्य्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक

वैदिक संस्कृति संरक्षण एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, जयपुर

वर्ष : 92 अंक : 24
भाद्रपद शुक्ल द्वादशी
विक्रम संवत् 2075
कलि संवत् 5119
21 सितम्बर 2018 से 05 अक्टूबर 2018
दयानन्दाब्द : 194
सृष्टि संवत् : 01,96,08,53,119
मुख्य सम्पादक :
डॉ. सुधीर शर्मा – 9314032161
संपादक मंडल :
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री विजयसिंह भाटी , जोधपुर
श्री ब्रह्मप्रकाश आर्य, जयपुर
डॉ. स्नेहलता शर्मा, राज. सस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर
श्री हरिपाल शास्त्री , अलवर
श्री जगदीश आर्य, जखराणा, अलवर
श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
डॉ. संदीपन आर्य, जयपुर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य्य , अलवर
प्रकाशक : आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
दूरभाष : 0141 – 2621879
प्रकाशन : दिनांक 5 एवं 21
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता :
डॉ. सुधीर शर्मा सम्पादक, आर्य्य मार्तण्ड, 42, मुक्तानन्द नगर, गोपालपुरा बाईपास , जयपुर – 302018। मो. – 9314032161
मुद्रक : राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशिएट्स, जयपुर
ग्राफिक्स : प्रिण्टपैक, जयपुर ।
ई–मेल :
aryamartand@gmail.com
arya.sabha1896@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया
ऑनलाईन प्राप्ति :
www.thearyasamaj.org/aryamart

आर्यसमाज की महान विभूती– डॉ भवानी लाल भारतीय

भवानी लाल भारतीय जी का दिनांक 12 सितम्बर 2018 को देहावसान हो गया। उनका जाना बहुत ही दुखद समाचार है। वैदिक साहित्य तथा आर्य समाज के लिए यह अपूर्णीय क्षति है, ऋषि दयानंद के जीवन पर जितना साहित्य उन्होंने दिया वह उनकी अद्वितीय देन है, उनकी स्मृति को शत् शत् नमन्।

स्वामी दयानंद की वैदिक विचारधारा को जन–जन तक पहुँचाने में हज़ारों आर्यों ने अपने अपने सामर्थ्य के अनुसार योगदान दिया। साहित्य सेवा द्वारा श्रम करने वालो ने पंडित लेखराम की अंतिम इच्छा को पूरा करने का भरपूर प्रयास किया। डॉ भवानीलाल भारतीय आर्य जगत कि महान विभूति हैं जिनका सम्पूर्ण जीवन साहित्य सेवा द्वारा ऋषि के ऋण से उऋण होने के लिए प्रयासरत रहा। राजस्थान के नागौर जिले के परबतसर ग्राम में 1 मई 1928 को भारतीय जी का जन्म हुआ। प्रारंभिक शिक्षा के पश्चात आपने अध्यापन करते हुए हिंदी एवं संस्कृत दो भाषाओँ में एम.ए किया। कालांतर में आपने आर्यसमाज की संस्कृत भाषा को देन विषय पर शोध प्रबंध लिखा जिसे पंडित भगवत दत्त सरीखे मनीषी द्वारा सराहा गया। आप आर्यसमाज पाली,अजमेर के प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, परोपकारिणी सभा, सार्वदेशिक सभा के अधिकारी भी रहे। आप स्वामी दयानंद चेयर, पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़ के अध्यक्ष पद
से सेवा निवृत्त हुए।

डॉ भारतीय जी का लेखन–

1. तुलनात्मक अध्ययन विषयक ग्रन्थ – ऋषि दयानंद और अन्य भारतीय धर्माचार्य,महर्षि दयानंद और राजा राममोहन राय, आधुनिक धर्म सुधारक और मूर्तिपूजा, महर्षि दयानंद और स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद और ईसाई मत,

2. वेद विषयक ग्रन्थ – वेदों में क्या हैं?, वेदाध्ययन के सोपान, उपनिषदों की कथाएं भाग १, ऋग्वेद–यजुर्वेद–सामवेद एवं अथर्ववेद परिचय, वेदों की अध्यात्मधारा, वैदिक कथाओं का सच, उपनिषदों की अध्यात्म धारा,ऋग्वेद–यजुर्वेद–सामवेद एवं अथर्ववेद अध्यात्म शतक,

3. ऋषि दयानंद विषयक ग्रन्थ– महर्षि दयानंद का राष्ट्रवाद, ऋषि दयानंद और आर्यसमाज की संस्कृत भाषा और साहित्य को देन, महर्षि दयानंद श्रद्धांजलि, महर्षि दयानंद प्रशस्ति, ऋषि दयानंद के ऐतिहासिक संस्मरण, स्वामी दयानंद के दार्शनिक

योहि मित्रेषु कालज्ञः सततं साधु वर्तते । तस्य राज्यं च कीर्तिश्च प्रतापश्चाभिवर्धते।। –वाल्मीकि रामायण – किष्किन्धाकाण्ड, सर्गः 23 ।।
अर्थात् समय को जानने वाला जो पुरुष अपने मित्रों के साथ उत्तम व्यवहार करता है उसका राज्य, यश और प्रताप उत्तरोत्तर बढ़ता है।

सिद्धांत, दयानंद साहित्य सर्वस्व, महर्षि दयानंद प्रशस्ति काव्य,मैंने ऋषि दयानंद को देखा, ऋषि दयानंद की खरी खरी बातें, ऋषि दयानंद के चार लघु चरित, दयानंद चित्रावली (अंग्रेजी) Swami Dayanand Saraswati His Life And Ideas & Shiv Nandan Kulyar

4. महापुरुषों के जीवनचरित – श्री कृष्ण चरित, पंडित गणपति शर्मा, स्वामी दर्शनानन्द, महात्मा कालूराम जी, कुंवर चाँद करण शारदा, नवजागरण के पुरोधा–स्वामी दयानंद, पंडित श्याम जी कृष्ण वर्मा, ऋषि दयानंद के भक्त,प्रशंसक और सत्संगी, श्रद्धानन्द जीवनकथा, राजस्थान के आर्य महापुरुष

5. आर्यसमाज विषयक ग्रन्थ – आर्यसमाज के शास्त्रार्थ महारथी, आर्यसमाज के वेद सेवक विद्वान, परोपकारिणी सभा का इतिहास, आर्यसमाज का अतीत और वर्तमान, आर्यसमाज के पत्र और पत्रकार, आर्यसमाज विषयक साहित्य परिचय, आर्यसमाज का इतिहास–पांच खंड का विवेचन, आर्यसमाज के बीस बलिदानी,

6. स्वामी दयानंद के ग्रंथों का संपादन – चतुर्वेद विषय सूची, ऋग्वेद के प्रारंभिक 22 मन्त्रों का भाष्य, दयानंद शास्त्रार्थ संग्रह, दयानंद उवाच, महर्षि दयानंद की आत्मकथा, उपदेश मंजरी,पंडित लेखराम रचित स्वामी दयानंद का जीवनचरित

7. अन्य ग्रन्थ – बालकों की धर्म शिक्षा, पंडित रूद्र दत्त शर्मा ग्रंथावली भाग 1, शुद्ध गीता, दयानंद दिग्विजयार्क, कविरत्न प्रकाशचंद्र अभिनन्दन ग्रन्थ, पंडित महेंद्र प्रताप शास्त्री अभिनन्दन ग्रन्थ, स्वामी भीष्म अभिनन्दन ग्रन्थ, श्रद्धानन्द ग्रंथावली 9 भाग, ऋषि दयानंद प्रशस्ति, श्री दयानंद चरित

8. विभिन्न ग्रन्थ – विद्यार्थी जीवन का रहस्य, ब्रह्मवैवर्त पुराण की आलोचना, महर्षि दयानंद निर्वाण शताब्दी व्याख्यान माला, आर्य लेखक कोष–1200 आर्यविद्वानों का लेखन परिचय,

9. सत्यार्थ प्रकाश विषयक ग्रन्थ – ज्ञानदर्शन–एकादश समुल्लास की व्याख्या, विश्व धर्म कोष –सत्यार्थ प्रकाश , हिन्दू धर्म की निर्बलता

10. अनूदित ग्रन्थ – श्रीमद्भागवत (गुजराती), मीमांसा दर्शन (गुजराती), आर्यसमाज–लाला लाजपत राय (अंग्रेजी), श्रद्धानन्द ग्रंथावली – कांग्रेस एंड आर्यसमाज एंड इट्स डेट्रेक्टर्स, पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी–लाला लाजपत राय कृत का हिंदी अनुवाद, सूरज बुझाने का पाप (गुजराती) इसके अतिरिक्त आर्यसमाज कि विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में 1000 के करीब शोधपूर्ण लेख भी शामिल हैं।

डॉ भारतीय जी की साहित्य साधना करीब एक लाख पृष्ठों से अधिक हैं और 50 से अधिक वर्षों का साधना और तप का परिणाम हैं। इस अवसर पर मैं केंद्रीय मंत्री डॉ सत्यपाल सिंह जी से डॉ भारतीय जी की स्मृति में देश के शीर्ष विश्विद्यालय में उनकी स्मृति में चेयर स्थापित करने की विनती करता हूँ। इस चेयर से उनके द्वारा लिखित सकल साहित्य को न केवल सुरक्षित किया जाये अपितु उस पर शोधार्थी शोध भी करे।

डॉ विवेक आर्य

मोहनपुरा स्थित महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर में दिनांक 17 सितम्बर 2018 को ऋषि स्मृति सम्मेलन के निमंत्रण पत्र का विमोचन आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश के द्वारा विमोचन किया गया। ऋषि स्मृति सम्मेलन 28 सितम्बर से 2 अक्टूबर 2018 पाँच दिवसीय सम्मेलन का आयोजन होगा जिसमें भारत वर्ष से सन्यासी व उच्च कोटी. के विद्वानों द्वारा प्रवचनों का कार्यक्रम चलेगा। 26 सितम्बर से निःशुल्क योग शिविर लगेगा जिसमें योगमूर्ति स्वामी कर्मवीर जी हरिद्वार से पधारेगें। इस सम्मेलन में विषय निम्न होगे जिसमें –त्रैतवाद, पंच महायज्ञ सम्मेलन, वेद सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन, पर्यावरण समस्या और समाधान, महिला सम्मेलन, सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन, युवा सम्मेलन, गृहस्थ को स्वर्ग कैसे बनाऐं, समाज सुधार सम्मेलन इत्यादि होगें। इस कार्यक्रम में मंत्री किशनलाल आर्य, जयसिंह गहलोत, रामेश्वर जसमतिया, कैलाश चन्द्र आर्य, कमलकिशोर आर्य, यशपाल, प्रेमसिंह, दुर्गादास वैदिक, ओम आसेरी, सेवाराम आर्य, नरपत भाभा आदि उपस्थित थे।

आर्य किशन लाल गहलोत
मन्त्री

कः कालः कानि मित्राणि कः देशः को व्ययागमोः । कस्याहं का च मे शक्तिरिति चिन्त्यं मुहुर्मुहुः ।। – अर्थात् कैसा समय है, कौन सा देश है, कौन मेरे मित्र हैं? मेरी आय–व्यय क्या है? मैं किसकी ओर हूँ और मेरी क्या शक्ति है! इसे बार–बार सोचना चाहिए।

को वेदानुद्धरिष्यति

को वेदानुद्धरिष्यति,यह वाक्य किसी राजकुमारी के मुख से तब निकला, जब अवैदिकों के द्वारा वेदविरुद्ध वेदों की घोर निंदा और अवमानना की जा रही थी। उस समय वह अत्यन्त व्यथित थी क्योंकि उसको वेदों का इस प्रकार से तिरस्कार असह्य हो गया था। और वह ऊँचे राजप्रासाद पर जाकर अपने आप को असहाय अनुभव करते हुए कह रही थी,"किं करोमि क्व गच्छामिको वेदानुद्धरिष्यति" अर्थात् अब मैं क्या करूँ, कहाँ जाऊँ? क्योंकि वेदविरोधियों का दुर्दान्त आक्रमण हो रहा है, ऐसी परिस्थिति में वेदों की रक्षा कौन करेगा? उसी समय नीचे मार्ग पर चलते हुए उस समय के उद्भट विद्वान् आचार्य कुमारिल भट्ट के कानों में यह वाक्य पड़ा। उस राजबाला के इस असहाय वेदनापूर्ण वाक्य को सुनकर वे अत्यन्त आहत हुए और तत्काल उन्होंने उसको सम्बोधित करते हुए कहा कि"मा रुदिहि वरारोहे भट्टाचार्योस्ति भूतले"अर्थात् हे राजबाले! तुम वेदों के विरोधियों द्वारा इस प्रकार से विनाश को देखकर रोदन मत करो। तुम्हें चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं क्योंकि कुमारिल भट्ट उन विरोधियों के आक्रमण का प्रत्युत्तर देने के लिए सन्नद्ध है। उस आचार्य ने उनका उत्तर देने के लिए उन पर सिंहवत् आक्रमण कर दिया। वेदविरोधियों का दल छिन्न–भिन्न होने लगा। उनके सम्पूर्ण क्रिया–कलाप प्रभावहीन होने लगे। उसी समय में वेदविरोधियों के आक्रमण को प्रभावहीन बनाने के लिए आद्य शङ्कराचार्य का प्रादुर्भाव हुआ तथा इस आचार्यप्रवर ने भी वेदों की रक्षा का शङ्खनाद किया। आज वर्त्तमान में जो वेद उपलब्ध होते हैं, वह उन आचार्यद्वय के अक्लान्त पुरुषार्थ का फल है। इसके पश्चात् ही सायणाचार्य प्रभृति तथा इनसे भी पूर्ववर्त्ती आचार्यों ने भी अपने बुद्धिबल से वेदरक्षा का प्रयास किया। किन्तु सभी आचार्यों का यह प्रयास एकदेशीय था। इनका ध्येय सर्वं वेदात् प्रसिध्यति की ओर न जाकर कुछ यज्ञ–कर्मकाण्डों तथा आत्मसाधना तक ही सीमित रहा। वे विनियोग के जाल में इतने आबद्ध थे कि यज्ञ–कर्मकाण्ड के अतिरिक्त भी वेदों का कुछ महत्त्वपूर्ण और अर्थ हो सकता है, की ओर उनका ध्यान ही नहीं गया। अतः वेद अति संकुचित हो गये क्योंकि उनका प्रयोगस्थल अत्यन्त संकुचित हो गया था।

मनु के शब्दों में वेद, सर्वज्ञानमयो हि सः अर्थात् जो सभी ज्ञान–विज्ञान के आकर थे, वे अब कर्मकाण्ड के साधक के रूप में ही रह गये थे। संस्कृत से तथा वेदार्थ ज्ञान की परम्परा से सर्वथा शून्य यहूदी, ईसाई मतावलम्बियों को सायणादि के वेदभाष्यों को देखकर बड़ा बल प्राप्त हुआ क्योंकि उन्होंने इनके वेदार्थों को देख कर ही वेदों पर आक्षेप प्रारम्भ किये तथा चार्वक के स्वर में स्वर मिलाते हुए कहने लगे– त्रयो वेदस्य कर्त्तारः धूर्त्त–भाण्ड–निशाचराः। वेदभक्त जनता किङ्कर्तव्यविमूढ़ होकर मूकवत् बनकर दर्शक बनी रही या बाबावाक्यं प्रमाणम् कहकर लकीर पीटती रही क्योंकि इस विनियोग एवं अदृष्ट उत्पत्ति के अतिरिक्त भी वेदार्थ का कुछ महत्त्व है, वह नहीं समझ पा रही थी। ऐसी विकट परिस्थिति में "सर्वज्ञानमयो हि सः, सर्वं वेदात् प्रसिध्यति"इनवाक्यों को प्रामाणिक मानते हुए ऋषि दयानन्द ने पुनः वेदरक्षा का डिण्डिम घोष कर दिया और प्राचीन ऋषि–महर्षियों की वेदार्थ करने की परम्परा का शुभारम्भ किया। उनके सम्मुख उल्लिखित यह वाक्य सदा उपस्थित रहता था और वे निश्चयपूर्वक ये समझ रहे थे कि वेदज्ञान के अतिरिक्त और किसी प्रकार के ज्ञान से भारत ही नहीं अपितु विश्व की मानवता का कल्याण नहीं हो सकता। वेद सूर्य के प्रकाश से विश्व तभी आलोकित हो सकता है, जब वेदविरोधियों द्वारा फैलाये अज्ञान रूपी मेघ का सर्वनाश हो और वे इस कार्य में संलग्न हो गये। उन्होंने विश्व के मानवों को यह समझाने का प्रयास किया कि जैसे पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश सभी मनुष्य के लिये उपादेय हैं, उसी प्रकार वेद भी किसी भी भेदभाव के बिना मनुष्यमात्र के लिये उपयोगी हैं। अतः प्रथम इस स्तर पर उन्होंने अपभाष्यों का अपाकरण कर शुद्ध वैदिक वेदार्थ प्रक्रिया का पुनः सञ्चार किया। ऋषि दयानन्द की यह विशेषता थी कि उन्होंने सच्चे हृदय से किसी मत–वाद में न उलझ कर यथार्थ वेद के अर्थ को लोगों के सम्मुख प्रस्तुत करना प्रारम्भ किया। इसका सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि वेदभक्ति में वे कल्पना की उड़ान में कभी नहीं उड़े। अपने वेदभाष्यों के प्रारूप को तथाकथित वेदभक्तों सायण, उव्वट, महीधर आदि के अनुगामी तथा वेदविरोधी चार्वक समर्थक एवं पाश्चात्त्य विद्वानों के सन्निकट अवलोकनार्थ भेजा। जिससे वेदविरोधियों के

दुर्जेय कहे जाने वाले अस्त्र–शस्त्र एवं दुर्ग प्रभावहीन तथा दोलायमान होने लगे और वे आक्रान्ता अपने आप को कुछ प्रभावहीन तथा हतप्रभ अनुभव करने लगे एवं आत्मसुरक्षा की स्थिति में आ गये। ऋषि दयानन्द ने जिस ब्रह्मास्त्र का प्रयोग वेदार्थ में किया, वह नूतन नहीं था। लौकिक काव्यों में जिस प्रकार से अलङ्कारों के प्रयोग से उस काव्य की महिमा बढ़ती है तथा उनके अनेक अर्थ होते हैं, उसी प्रकार उन्होंने वेद महाकाव्य "देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति" को समझने का उद्योग किया। इसका सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि मनु का वाक्य "सर्वज्ञानमयो हि सः, सर्वं वेदात् प्रसिध्यति"यह यथार्थ में प्रतीत होने लगा।

इसी श्रृङ्खला में अनेक विद्वानों ने प्रयास किया। किन्तु अपने समय के वेदार्थ के महान् चिन्तक तथा आर्ष परम्परा के अनन्य भक्त श्री स्वामी समर्पणानन्द जी ने भी इस पद्धति को सर्वात्मना आत्मसात् किया। यद्यपि विभिन्न क्षेत्रों में भी उनकी प्रतिभा की अप्रत्याहत गति थी। पुनरपि वेदनिष्ठा एवं भक्ति के कारण अपनी प्रतिभा का प्रयोग सच्चे वेदार्थ को जानने में प्रयुक्त किया। उनके जीवन का भी लक्ष्य एक मात्र वेदों का उद्धार ही था। सोम, स्वर्ग, मरुत् तथा शतपथ में एक पथ, वेदों के सम्बन्ध में क्या जानो क्या भूलो, अद्भुत कुमारसम्भव आदि लघु ग्रन्थ उनकी प्रतिभा के जाज्वल्यमान उदाहरण हैं। पञ्चयज्ञ प्रकाश, कायाकल्प तो दैनिक यज्ञों के प्रकाशक तथा वैदिक वर्ण–व्यवस्था के पोषक सिद्ध होते हैं। पाश्चात्त्य विद्वानों के कुतर्कों को कुण्ठित करते हुए ऋग्वेदमण्डलमणिसूक्त अमूल्य ग्रन्थ का लेखन भी किया। गीता का सामर्पण भाष्य, जो उन्हीं के नाम से सामर्पण भाष्य के रूप में जाना जाता है। इसने भी भारतीय संस्कृति एवं परम्परा पर प्रहार करने वालों पर वज्रपात किया।

अब मनु का यह वाक्य"सर्वज्ञानमयो हि सः"तथा ऋषि दयानन्द का उस मनुवाक्य का अनुवाद "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है", प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होने लगा।किन्तु वर्त्तमान समय में सबसे बड़ी समस्या यह है कि आज भी हमारा विद्वत्समुदाय सायणादि वेदभाष्यकारों के मोह से अपने को मुक्त नहीं कर पा रहा है तथा सायण के ही अनुकरणकर्त्तापाश्चात्त्य विद्वानों के बुद्धिपाश में बंधा हुआ है।

आज हम सभी का यह कर्तव्य हो जाता है कि जिस प्रकार आचार्य कुमारिल भट्ट, आद्य शङ्कर, यास्क, ऋषि दयानन्द ने जिस वेदार्थ साखी का आश्रय लेकर वेद सूर्य द्वारा अज्ञान के मेघों को छिन्न–भिन्न कर जनता के समक्ष उसे पुनः प्रस्तुत किया। उसी प्रकार हम सभी का लक्ष्य सायणादि आचार्यों की वेदार्थ प्रक्रिया का रक्षण न हो कर वेद की रक्षा करना होना चाहिये। उन आचार्यों ने अपने–अपने समय में अपने अतुल पुरुषार्थ से वेद की रक्षा की। हमें भी अपने न्यूनाधिक पुरुषार्थ से वेदों की रक्षा का संकल्प लेना चाहिए और इस समय हम भट्ट कुमारिल के शब्दों को कुछ परिवर्त्तित कर सस्वर सम्भूय कहें– वेदरक्षकाः भूतले वयम्।

स्वामी विवेकानन्द सरस्वती (कुलाधिपति)
गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोला झाल, टीकरी, मेरठ

जिज्ञासा – समाधान

जिज्ञासा :–हम वेदमंत्रो को पढ़ते हैं। उनके अर्थ भावार्थ भी पढ़ते हैं, परन्तु हमें यह पता नहीं चलता कि वेदमन्त्र का ऋषि कौन है, देवता कौन है, छन्द कौन सा है ? इसका ज्ञान नहीं है। आपसे प्रार्थना है कि गायत्री मन्त्र का छन्द तो गायत्री है, परन्तु इसका ऋषि और देवता और छन्द भी बता देंवे। मन्त्र का ऋषि व देवता वेदमन्त्र में ही होता है, परन्तु हमें पता नहीं चलता इसका भी ज्ञान दे दें।

समाधान :– वेदमन्त्र के छन्द, देवता, ऋषि प्रायः वेद संहिताओं अथवा वेदभाष्यों में उपलब्ध होते हैं, उससे यह इनका ज्ञान किया जा सकता है देवता और ऋषि अर्थात् मंत्र का विषय और उस मंत्र को साक्षात् करने वाला ये वेद संहिता में सूक्ति अथवा अध्याय का प्रारंभ होने से पहले मिलते हैं मंत्र का देवता प्रायः मंत्र में मिल जाता है, अनेक बार सीधे सीधे शब्दों में अथवा उसके पर्यायवाची शब्दों के द्वारा आपने लिखा, ऋषि और देवता वेदमंत्र में ही होता है। सो ठीक नहीं, क्योंकि देवता तो मंत्र में होता है किंतु ऋषि मंत्र में नहीं होता। ऋषि तो उस मंत्र के अर्थ का द्रष्टा होता है, उस द्रष्टा ऋषि का नाम मंत्र के साथ इतिहास की दृष्टि से लिखा आ रहा है की प्रथम बार इस नाम के ऋषि ने अमुक मंत्र को साक्षात् किया था। अनेक मंत्रों में ऋषि का नाम दिखता है, यथार्थ में वह नाम उस ऋषि का वास्तविक नाम नहीं होता, अपितु उस मंत्र का साक्षात् करने के कारण गौणिक नाम होता है। उस गौणिक नाम को देखकर कुछ लोग मानते हैं कि मंत्र में ऋषि होता है, जो उचित नहीं है। छंद ज्ञान के लिए तो छंदशास्त्र को पढ़ना जानना पड़ेगा तभी छंद को जान पायेंगे। गायत्री मंत्र वेद में अनेक स्थान पर आया है। इस मंत्र का सविता देवता और निचृद् गायत्री छंद सब स्थान पर एक जैसा है ऋषि भिन्न है यजु. 36.3 व 3.35 का ऋषि विश्वामित्र और यजु. 30.2 का ऋषि नारायण हैं। ऐसे ही विश्वानि देव मंत्र का देवता सविता और छंद गायत्री है, किंतु ऋषि इसके भिन्न भिन्न हैं। यजु. 30.3 का विश्वामित्र और ऋ. 5.82.5 श्यावाश्वात्रेय ऋषि है।

आचार्य सोमदेव,
अजमेर

सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते। ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत ।। गीता – 14/11।।
सत्त्वगुण की अभिव्यक्ति को तभी अनुभव किया जा सकता है, जब शरीर के सारे द्वार ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं।

(वेद स्वाध्याय) कौन मुझे भेजते हैं।

ईळते त्वामवस्यवः कण्वासो वृक्तबर्हिषः।
हविष्मन्तो अरङ्कृतः।। ऋ 1।14। 5।।

अर्थ –हे परमेश्वर!(अवस्वः) अपनी सुरक्षा चाहने वाले जिज्ञासु (अवगतौ) (कण्वासः) (मेधावी कण रथ शब्दे) जो तुम्हारी स्तुति करते और कण–कण का ज्ञान्अर्जन करते हैं (वृक्तबर्हिषः) जिन्होंने अपने ह्रदयों के झाड़–झंखाड़ों (वासनाओं) को काटकर तुम्हारे बैठने के लिए अपना ह्रदय सिंहासन सजाया है। (हविष्मन्तः) जिनका जीवन हवि के समान पवित्र बन गया है,(अरंकृतः) जो यम नियमों के पालन से सुशोभित हो गए हैं। जिन्होंने संसार के भोगों से अलम्–बस कर लिया है (त्वाम्) तुझे वे जन (ईडते) भजते हैं।

परमात्मा की भक्ति तो अपने अपने विश्वास के अनुसार बहुत से लोग करते हैं। यहां तक कि चोर लुटेरे भी अपने कार्य की सिद्धि के लिए देवी–देवताओं की मनौती मनाते हैं। गीता में इन सभी भक्तों को चार श्रेणियों में विभक्त किया है–

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनो र्जुन।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञान च भरतर्षभः।।
तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एक भक्तिर्विशिष्यते। गीता 7.16–17 ।।

दुःखो से ग्रस्त, जिज्ञासु जानने की इच्छा वाले, सांसारिक धनैश्वर्य को चाहने वाले और ज्ञानी ये चार प्रकार के लोग भगवान की भक्ति करते हैं जिनमें परमात्मा में अनन्य प्रेम भक्ति रखने वाला ज्ञानी हि सबसे श्रेष्ठ है। सर्वप्रथम दुःखी लोगों को ही भगवान का नाम स्मरण होता है– दुःख में सुमिरन सब करें सुख में करे न कोय। जब व्यक्ति सभी ओर से अपने आप को संकटों से घिरा हुआ पाता है और उसे कोई दूसरा उपाय नहीं सूझता है तब वह भगवान की शरण में जाता है।

दूसरी श्रेणी के लोग इसलिए भी भगवान का नाम स्मरण करते हैं कि चलो देखें तो सही कि भगवान कैसा है और उसकी भक्ति से कुछ लाभ होता है या नहीं

तीसरी श्रेणी में वे लोग हैं जो सांसारिक धन–संपत्ति या अपने कार्य की सफलता, पद प्राप्ति आदि को ध्यान में रख जप, तप अनुष्ठान आदि करते हैं। इनका दृष्टिकोण विशुद्ध व्यापारिक होता है।

चतुर्थ श्रेणी में वे ज्ञानी आते हैं, जिन्हें किसी प्रकार के दुःख निवारण, जिज्ञासा और सांसारिक वस्तु की इच्छा नहीं है। वे अनन्य भाव से उसके प्रेम और भक्ति में श्रद्धान्वित होकर लगे रहते हैं।

ईश्वर प्राप्ति के उपाय में भक्ति योग सबसे सुगम है–

क्हहु भक्ति पथ कवन प्रयासा, जोग न मख जप तप उपवासा।
सरल स्वभाव न मन कुटिलाई, जथा लाभ सन्तोष सुहाई।।
(रामचरित. उ. का.)

परमात्मा में अनन्य प्रेम होना ही भक्ति है। वेद का यह मंत्र मार्गदर्शन करते हुए कहता है–

1.अवस्यवः– जिन्हें मृत्यु सामने दिखाई देती है और वह उससे बचना चाहते हैं तो दूसरे उपायों को सुरक्षित न मान वे प्रभु की शरण को सर्वोत्तम जान उसी के शरणागत हो जाते हैं।

2.कण्वासः – मेधावी लोग ही ठीक प्रकार से भक्ति योग का अभ्यास कर सकते हैं। परमात्मा को इंद्रियों द्वारा देखा जाना संभव नहीं। उसे केवल ज्ञान नेत्र अर्थात् अंतःकरण से अनुभव मात्र किया जा सकता है। जैसे कि हमें भूख–प्यास की अनुभूति होती है। भक्ति केवल अंध श्रद्धा ना होकर ज्ञान सहितसर्वात्मना अपने आपको परमात्मा में निमग्न कर देना है। यह कार्य बुद्धिमान् ही कर सकता है अज्ञानी नहीं।

3.वृक्तबर्हिषः – जैसे यज्ञादि में झाड़–झंखाड़ और पत्थरों को हटाकर भूमि को समतल कर सुंदर आसन बिछाए जाते हैं जिन पर ऋत्विक लोग बैठते हैं वैसे ही परमात्मा का आह्वान करने के लिए ह्रदयवेदि के चारों ओर उगी काम क्रोध की खरपतवार और राग द्वेष के कण्टकों को हटाकर श्रद्धा का आसन बिछाया जाता है तब कही वे परम देव आकर बैठते हैं।

4.हविष्मन्तः – यज्ञ में जिन पदार्थों की आहुति दी जाती है, पहले उन्हें शुद्ध करते हैं और फिर शाकल्य बना विधि–विधान से अग्नि में उसकी आहुति देते हैं। इसी भाँति जिनका जीवन पवित्र हो गया है उन्हीं पर परमात्मा कृपादृष्टि करते हैं।अतप्तनूर्न तदामो अश्नुते जिसने अपने आपको तप की भट्टी में नहीं तपाया वह कच्चा है और जैसे कच्चे घड़े में पानी नहीं ठहरता वैसे ही उसे परमात्मा का दर्शन नहीं होता।

5.अरङ्कृतः– जब किसी के यहाँ कोई अतिथि आता है तो घर का स्वामी स्वयं स्वच्छ वस्त्र पहनकर अन्य कार्यों से निवृत्त होकर द्वार पर उसकी प्रतीक्षा करता है ऐसे ही उस प्रभु को अपना अतिथि बनाने के लिए यम नियमों से सुसज्जित और सांसारिक झंझटों से विरक्त होकर उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा में पलक पांवडे बिछाने होते हैं। भक्ति का नशा इतना चढ़ जाये कि क्षणभर भी प्रभु से दूर होना कष्टदायक हो, तब कहीं जाकर उसकी कृपा दृष्टि होती है। जिसके दर्शन हो जाने पर अन्य किसी को जानने या देखने की इच्छा शेष नहीं रहती।

डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती
प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्यवीर दल

इन्द्रियाणां विचरतां, विषयेष्वपहारिषु । संयमे यत्नमातिष्ठेद्, विद्वान् यन्तेव वाजिनम् ।। – मनु. 2.88।।

अर्थात् विद्वान् मनुष्य, अपनी ओर आकर्षित करने वाले विषयों में विचरने वाली इन्द्रियों को नियन्त्रित करने में उसी प्रकार प्रयत्न करें, जैसे सारथी घोड़ों के नियन्त्रण में यत्न करता है।

आर्यवीर दल, राजस्थान के बढ़ते कदम –

आर्यवीर दल राजस्थान के प्रान्तीय व्यायाम शिक्षक श्री भागचन्द आर्य दस दिन तक आर्य समाज भीलवाड़ा में आर्यवीरों को प्रशिक्षण देकर लौट आये हैं। भीलवाड़ा में पुराने आर्यवीरों की बैठक बुलाई गई, जिसमें राहुल आर्य को शाखा संचालक, सुनील आर्य उपव्यायाम शिक्षक को नगर संचालक व जितेन्द्र आर्य व्यायाम शिक्षक को नगर मंत्री नियुक्त किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आयवीरों को भेजने का आश्वासन भी भीलवाड़ा से मिला। कार्यक्रम को सुचारु रूप से सम्पन्न कराने में श्री विजय शर्मा प्रधान आर्य समाज भीलवाड़ा व उनकी कार्यकारिणी का सहयोग प्रंशसनीय रहा। प्रान्तीय आर्यवीर दल को तीन हजार पाँच सौ रुपये का सहयोग भी प्राप्त हुआ। श्री भगचन्द आर्य के आगामी कार्यक्रमों में आर्य समाज सांभर जयपुर, आर्यवीर दल जैसलमेर, कुशलगढ़ बांसवाड़ा आदि शामिल हैं।

महासम्मेलन में जाने वाले सभी शाखानायकों, उपव्यायाम शिक्षकों, व्यायाम शिक्षकों एवं जिला व संभाग संचालकों तथा पदाधिकारियों से अनुरोध है कि वे अपना बैनर निम्न प्रारूप में अवश्य ही बना लें।

आर्य वीर दल राजस्थान

ओ३म्

शाखा ..... जिला.....

आर्य समाज का लघु गुरुकुल सत्र सम्पन्न

आर्य समाज द्वारा स्थानीय लाल चंद मोरीज वाला धर्मशाला में आयोजित दो दिवसीय "लघु गुरुकुल "सत्र का दिनांक 2 सितम्बर 2018 को समापन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य आचार्य वैदिक विद्वान महेश जी आर्य ने वेद विद्या की जानकारी देते हुए बताया कि वेदों की विद्या से दूर होने के कारण ही हमारे राष्ट्र का नाम आज आर्यावर्त न होकर चार– चार नाम हो गए। यहाँ जो भी आया इस देश की संस्कृति और सभ्यता को तहस नहस करके गया और आज तक यह सिलसिला जारी है इस राष्ट्र को तोड़ने वाली ताकतें आज भी सर उठाए खड़ी है। जबसे वेद विद्या का पढ़ना–पढ़ाना कम हुआ इस राष्ट्र में अनेक मत पंथ फैल गये जिनके परिणामस्वरूप रामरहीम, आसाराम, रामपाल जैसे लोगों ने अपने अपने साम्राज्य खड़े किए और इस देश की जनता को ग़लत दिशा दी।आज इस राष्ट्र में युवाओं को भ्रमित करने के भ्रामक विज्ञापन व चलचित्र दिखाए जा रहे हैं जिससे आज का युवा दुव्यसनो में फँसता जा रहा है। सत्र में उपस्थित शिविरार्थियों ने किसी भी प्रकार के व्यसन को नहीं करने का संकल्प लिया ।दो दिन के सत्र में 100 से अधिक लोगों ने वेद विद्या से योग, धर्म, राष्ट्र, समाज, ज्योतिष, भूत प्रेत जैसे विषयों को जाना। तथा 50 व्यक्तियों ने संस्कृति का प्रतीक " यज्ञोपवीत "धारण कर इस धर्म, समाज व राष्ट्र तथा अपने गुरुजनों वह माता पिता की सेवा का संकल्प लिया आर्य समाज संगठन के पदाधिकारियों ने उपस्थित सभी शिविरार्थियों को आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती कृत क्रांतिकारी ग्रंथ " सत्यार्थ प्रकाश "भेंट किया। कार्यक्रम के मुख्य संयोजक स्वामी आदित्यानंद जी ने बताया कि यदि वेद विद्या और इस राष्ट्र की रक्षा करनी है तो ऐसे लघु गुरुकुल सत्रों के माध्यम से हमें अपनी गति को और बढ़ाना होगा। शिविर में त्रिमूर्ति पब्लिक स्कूल पनियाला व हंस स्कूल कोटपूतली के विद्यार्थियों ने भी भाग लिया। आर्य समाज के मंत्री बहादुर सिहं आर्य, प्रधान राजेंद्र कुमार यादव, राम कुमार सैनी , महात्मा ओममुनी जयराम आर्य भगवान सहाय हनुमान प्रसाद, कोषाध्यक्ष शीशराम यादव, जगदीश प्रसाद आर्य, रोहिताश यादव डॉ. हरीश गुर्जर लीला राम सैन घीसाराम आर्य, एवं आस पास के आर्यसमाजों के पदाधिकारी उपस्थित रहे।सभी अतिथियों का आर्य समाज के कार्यकर्ताओं द्वारा स्वागत किया गया। मंच की व्यवस्था व संचालन अशोक आर्य ने किया।

रमेश आर्य,
प्रवक्ता आर्य समाज कोटपूतली

आर्य समाज सवाई माधोपुर का वार्षिक एवं संगीतमय वेद कथा का समापन

आर्य समाज मानटाऊन सवाई माधोपुर में दिनांक 15 से 17 सितम्बर 2018 तक वार्षिक उत्सव मनाया गया जिसमें श्रीमती संगीता आर्य द्वारा वेद एवं सत्यार्थ प्रकाश पर भजनोपदेश द्वारा वेद कथा के भजन प्रस्तुत किए गए तथा समाज में व्याप्त कुरीतियों पर प्रकाश डाला साथ में श्री आचार्य वीरेन्द्र द्वारा आध्यात्मिक प्रवचन प्रस्तुत किये गये। जिनको आर्य समाज में उपस्थित सदस्यों एवं श्रोताओं ने भाव विभोर होकर सुना। इन्होने दर्शनो, उपनिषदों पर सूक्ष्म तरीके से अपनी बात को सरल करके समझाया। इससे पूर्व तीनो दिनों तक प्रातः चतुर्वेद शतक परायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। जिसके ब्रह्मा आचार्य वीरेन्द्र एवं सुश्री प्रतिभा आर्या रहीं। अन्तिम दिन सवाई माधोपुर की विधायक श्रीमती राजकुमारी दीयाकुमारी जी उपस्थित हुईं जिन्होने भी भजनोपदेश श्रवण किया और यज्ञशाला में उपस्थित होकर यज्ञ का अवलोकन किया।

विशाल वैदिक सत्संग का आयोजन

वीरांगना दल की ओर से रविवार 16 सितम्बर को एक विशाल वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया। अनामिका शर्मा ने बताया कि सत्संग में वेदों के विद्वान स्वामी सम्पूर्णानन्द जी तथा दर्शनो के विशेषज्ञ स्वामी शांतानंद जी ने वर्तमान परिपेक्ष्य में चिंता को दूर करने, तनाव रहित जीवन जीने, भविष्य की चिंताओं से मुक्ति पाने, निराशा को उत्साह में बदलने तथा असफलता पर सफलता कैसे प्राप्त की जाए इसके तरीके बताए। स्वामी सम्पूर्णनन्द जी ने कहा कि जैसे जैसे मनुष्य के पास साधन बढ़ते जा रहे हैं वैसे वैसे सुख की उम्र घटती जा रही है। परमपिता परमेश्वर ने इस दुनिया को स्वर्ग और सुख का सागर बनाया है। जहर भी सुख के लिए ही बनाया गया है। जहर से ही अस्थमा की दवा बनती है। स्वामी शांतानन्द जी ने कहा कि जो व्यक्ति दूसरों के लिए कुछ भी करने को तैयार होगा वह हमेशा सुखी रहेगा। उन्होंने कहा कि जिसने जितना सदकर्म किया है, जितना दान दिया है, उसका जीवन उतना ही सुखमय होगा। उन्होंने तनाव दूर करने के उपाय के बारे में कहा कि मनुष्य को दूसरों से घृणा नहीं करनी चाहिए। सत्संग में बड़ी संख्या में आर्य समाजी, वीरांगना दल की सदस्याएं व शहर के कई गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

अनामिका शर्मा, जयपुर

प्रतियोगिता – वैदिक ज्ञान परिक्षा

ऋषि मिशन न्यास, अजमेर द्वारा दिनांक 24/09/2018 को उक्त परिक्षा आयोजित महाराणा प्रताप उच्च माध्यमिक विद्यालय चौरड़िया जोधपुर में किया जा रहा है । इस प्रतियोगिता में कक्षा 6 से 12 वीं तक के छात्र छात्राऐं भाग ले रही है । उक्त परीक्षा का आयोजन श्री चोखाराम चौधरी ऋषि मिशन के सक्रिय कार्यकर्ता के नेतृत्व में किया जा रहा है, दिनांक 24 को ऋषि मिशन न्यास के अध्यक्ष इस परिक्षा को लेंगे, 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र छात्राओं को सत्यार्थ प्रकाश व प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को 501/,201/ व 101/ रू. से सम्मानित किया जायेगा।

- **परमात्मा की बनायी हुई इस सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान लोगों का राज्य बहुत दिन तक नहीं चलता ।**

– सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / 232 / 2017-2019 / आर. एन. आई नं.10471/60

कार्यालय सूचना एवं निर्देश

- समस्त आर्य समाज अपने भवन पर ओ३म् ध्वज अनिवार्य रूप से फहरायें एवं मुख्य प्रवेश द्वार एवं भवनों के द्वार पर ''आर्य समाज/आर्य समाज मन्दिर'' इस प्रकार अवश्य अंकित करवायें। यथा समय आर्य समाज भवन, मुख्य द्वार, परिसर की बाउण्ड्री वॉल की मरम्मत, कलर पेन्ट आदि करवायें। आर्य समाज की सम्पत्तियों की सुरक्षा का उत्तरदायित्व सम्बन्धित आर्य समाज के पदाधिकारियों का है। आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा कभी भी आर्य समाज का निरीक्षण किया जा सकता है। कृपया अवगत रहें।
- आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान का मुखपत्र ''आर्य मार्तण्ड'' का प्रत्येक अंक नवम्बर–द्वितीय अंक से पीडीएफ फॉरमेट में भी उपलब्ध करवाया जा रहा है। इस फॉर्मेट में प्राप्त करने के लिए अपना ईमेल पता, नाम एवं सम्पर्क सूत्र aryamartand@gmail.com पर भेजें। वाट्स एप्प पर ''सत्यार्थ प्रकाश क्रान्ति, आर्य वीर राज. सूचना, आर्य वीर दल के अन्य सभी ग्रुप्स में नियमित रूप से उपलब्ध करवाया जा रहा है ।
- आर्य समाजों में होने वाली समस्त गतिविधियाँ ऋषि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों एवं वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार ही संचालित की जावें। उक्त प्रयोजनार्थ ही आर्य समाज संस्थाएँ अपने परिसर एवं भवन अन्य सम्बन्धित संस्थाओं को नियमानुसार उपलब्ध करवा सकती हैं। महर्षि दयानंद के सिद्धान्तों के प्रतिकूल उद्देश्यों वाली संस्थाओं एवं संगठनों आदि के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा एतदर्थ स्वीकृति नहीं है। साथ ही समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारियों को यह
- भी निर्देशित किया जाता है कि वे आर्य समाज के भवन अथवा परिसर को व्यवसाय की दृष्टि से किराये पर देने से पूर्व सभा से लिखित में स्वीकृति अनिवार्यतः प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में यह भी संसूचनीय है कि आर्य समाज के पदाधिकारियों को समाज के भवन, दुकान, जमीन अथवा किसी भी प्रकार की परिसम्पत्तियों को विक्रय करने का अधिकार नहीं है

आतिथ्य –आहुति

आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान द्वारा जयपुर में कार्यालय परिसर में निरन्तर आने वाले अतिथियों के लिए अस्थायी आवास एवं भोजन हेतु संचालित आतिथ्य–यज्ञ में अपनी बहुमूल्य आहुति देकर इस पवित्र यज्ञ को सुचारू रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे सभी आहुतिदाताओं का बहुत–बहुत आभार । अन्य जो भी इस व्यवस्था के सफल संचालन में अपनी आहुति भेंट करने के इच्छुक हों वे 9352547258 पर सम्पर्क कर सकते हैं। जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, स्मृति, विवाह आदि अवसरों पर आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित इस अतिथि यज्ञ में अपनी आहुति अर्पित पुण्यभागी बनें।

आगामी कार्यक्रम

1.पूर्वीय मण्डल आर्य समाज जनता कॉलोनी, जयपुर में वेद कथा एवं सामवेद परायण महायज्ञ दिनांक 27 सितम्बर से 30 सितम्बर 2018 तक।

2.आर्य समाज कुन्हाड़ी, कोटा में चतुर्वेद शतकम् महायज्ञ दिनांक 27 सितम्बर से 30 सितम्बर 2018 तक।

3.134 वाँ ऋषि स्मृति सम्मेलन महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन जोधपुर दिनांक 28 सितम्बर से 2 अक्टूबर 2018 तक।

4.सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव नवलखा महल, गुलाब बाग उदयपुर दिनांक 6 से 8 अक्टूबर 2018

5.ऋषि मेला परोपकारिणी सभा केसरगंज अजमेर द्वारा स्थान ऋषि उद्यान दिनांक 16 से 18 नवम्वर 2018 तक।

6.क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़, गुजरात दिनांक 18 से 25 नवम्बर 2018 तक।

आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित।
मु. सम्पादक एवं प्रकाशक डॉ. सुधीर कुमार शर्मा, मंत्री–आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

टिकट

प्रेषक:- सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
हनुमान ढाबे के पास , राजा पार्क, जयपुर-302004

खाता धारक का नाम : आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
यूको बैंकA/c No.:18830100010430 , जयपुर
IFSC - UCBA 0001883

प्रेषित

विशेष – आर्य्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। उनमें सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।